# आसान कहानियां

(बच्चों के लिए)

संग्रह

**अफ़ज़ल हुसैन** एम०ए० एल०टी०

अनुवाद

**नाहीद अख़्तर**

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह रहमान, रहीम के नाम से।'

# ख़त अल्लाह मियां के नाम

एक बच्चा था, नन्हा-मुन्ना। बच्चे का नाम था अख़्तर। अख़्तर यतीम था। उसके अब्बा मर चुके थे। सिर्फ़ अम्मी थीं।

एक दिन की बात है, अख़्तर स्कूल गया। स्कूल के सब बच्चों के पास पढ़ने-लिखने का सामान था। अख़्तर के पास कुछ भी नहीं था। सब के कपड़े अच्छे थे। अख़्तर के कपड़े फटे-पुराने थे। अख़्तर मुंह बिसोरता घर पहुंचा।

अम्मी ने रोनी सूरत देखी, पूछा,

"मेरे लाल क्यों रो रहे हो?"

अख़्तर बोला, "अम्मी जान ! सबके अब्बा बड़े अच्छे हैं। अपने बच्चों के लिए अच्छे-अच्छे कपड़े बनवा देते हैं। लिखने-पढ़ने का सारा सामान ला देते हैं। हमारे अब्बा क्यों नहीं भेजते ? आप पता बता दें, मैं उनको ख़त लिखूंगा।"

"बेटा वह तो मर चुके हैं।" अम्मी ने जवाब दिया।

"तो फिर हमको कमाकर खिलाता कौन है ?" अख़्तर ने पूछा।

"हमको सब कुछ अल्लाह मियां दे देते हैं।" अम्मी ने कहा।

अख़्तर बोला, "अच्छा अल्लाह मियां का पता बता दो।

मैं उनको ख़त लिख दूं।"

अम्मी ने पता बता दिया। अख़्तर ने अल्लाह मियां को ख़त लिखा–

> प्यारे अल्लाह मियां !
>
> अस्सलामु अलैकुम !
>
> मेरे पास न तो किताबें हैं और न क़लम-दवात। कपड़े भी फट गये हैं। आप मेरे लिए यह सब चीज़ें भेज दें। हमारे अब्बा मर गये हैं। अम्मी कहती हैं, हम को सब कुछ आप देते हैं। आप को छोड़ कर हम किस से मांगें।
>
> फ़क़त
>
> आपका बन्दा
>
> अख़्तर

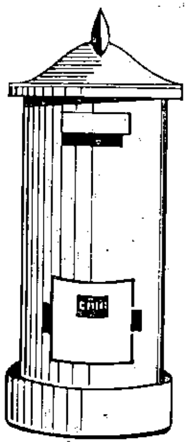
अख़्तर ने ख़त बन्द किया और लिफ़ाफ़े पर पता लिखा :

> बख़िदमत जनाब अल्लाह मियां
>
> मुक़ाम अर्श
>
> मुल्क आसमान



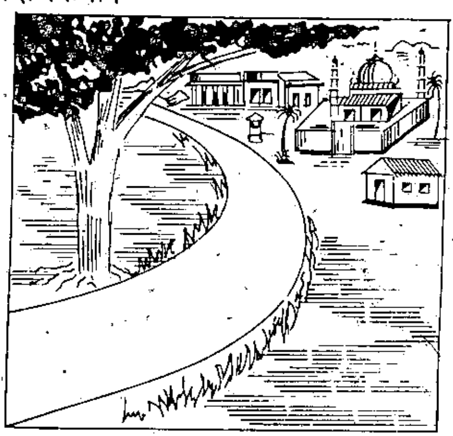

ख़त लेकर डाकख़ाने पहुंचा। लेटर बक्स में ख़त डालन चाहा। सूराख़ ऊपर था, हाथ पहुंच न सका। इधर-उधर देख

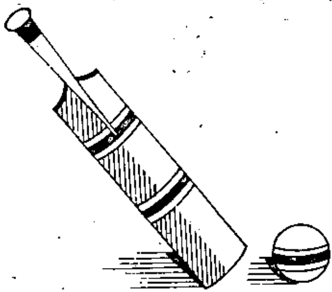
लगा। एक बड़े मियां आ रहे थे। अख़्तर ने उन से ख़त डालने के लिए कहा। बड़े मियां ने ख़त हाथ में लिया। पता देखा।



पूछा ख़त में क्या लिखा है ? अख़्तर ने बताया। बड़े मियां उसके भोलेपन पर मुस्कराये। घर आये। एक जोड़ा कपड़ा बनवाया। पढ़ने-लिखने का सामान ख़रीदा। थोड़ी-सी मिठाई ली, और लेकर अख़्तर के घर पहुंचे। बोले, "क्यों बेटे अख़्तर! तुमने अल्लाह मियां को ख़त लिखा था। देखो अल्लाह मियां ने तुम्हारे लिये कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें भेजी हैं।"

अख़्तर ने ख़ुशी-ख़ुशी सब चीज़ें ले लीं और अल्लाह मियां का शुक्र अदा किया।





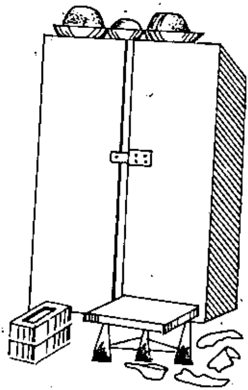
# गेंद बल्ला

ज़फ़र और क़मर दोनों साथी थे। एक दिन की बात है, ज़फ़र घर में अकेला था। अम्मी पड़ोस में गयी थीं। क़मर दौड़ा-दौड़ा आया। बोला, "आओ ज़फ़र ! चलो गेंद बल्ल खेलें।"

ज़फ़र के पास गेंद भी थी, और बल्ला भी। बल्ला कमर के कोने में रखा था, गेंद अलमारी पर। ज़फ़र दौड़कर बल्ल ले आया। बोला गेंद ऊपर है, अम्मी हैं नहीं, किस तरह उतार जाए। पंजों के बल खड़े होकर हाथ लपकाया, पहुंच न सका सेहन से दो ईंटें उठा लाया, ऊपर-नीचे रखीं। ईंटों पर खड़ हुआ फिर भी पहुंच न सका। पास ही एक स्टूल था। दोनों उसे उठा लाये। अब भी हाथ न पहुंचा। क़मर बोला, "ज़फ़र ! लो बल्ले से लुढ़का कर नीचे गिरा दो।"



ज़फ़र ने हाथ में बल्ला लिया, बल्ला गेंद तक पहुंच गया लुढ़काया। गेंद नीचे आ रही। मगर अलमारी पर चाय की प्यालिय



रखी थीं। बल्ला अचानक चाय की एक प्याली से टकरा गया । प्याली भी नीचे आ रही और फ़र्श पर गिर कर टूट गई। ज़फ़र हक्का-बक्का खड़ा रहा। क़मर ने कहा, देखते क्या हो; आओ चुपके से भाग चलें। तुम्हारी अम्मी को पता भी न चलेगा कि प्याली किस ने तोड़ी। ज़फ़र चुपचाप खड़ा रहा। क़मर फिर बोला, "क्या शामत आई है? पिटने पर तुले खड़े हो, भाग क्यों नहीं चलते ?"

ज़फ़र बोला, "मैं तो नहीं जाता। अम्मी न जाने किस पर शक करें। ग़लती मेरी और पिट जाये दूसरा। यह कितनी बुरी बात होगी।"

इतने में अम्मी आ गईं। देखा प्याली टूटी हुई है और ज़फ़र मियां स्टूल पर खड़े आंसू बहा रहे हैं। प्यार से बोलीं, "क्या हुआ बेटे, रोते क्यों हो ? तुमने जान-बूझकर तोड़ी नहीं, टूट गई तो क्या हुआ ? अब आगे ख़याल रखना।"

क़मर चुपके से भागने वाले थे। मगर यह देखने के लिए रुक गये थे कि अभी ज़फ़र को दो-तीन थप्पड़ पड़ेंगे । मगर वहां तो कुछ भी नहीं। अम्मी ने मारा नहीं और ढाढ़स बंधा दी।

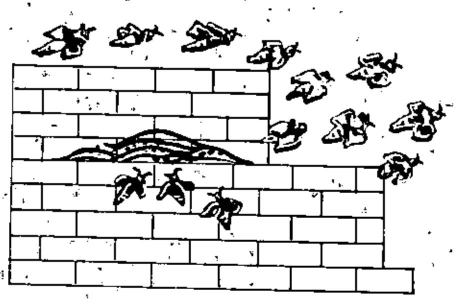
# इम्तिहान

इम्तिहान होने वाला था। सब बच्चे ख़ूब तैयार होकर आये थे। किताब सबने फर्-फर सुना दी। मास्टर साहब ने जो सवाल पूछा, झट्-पट बता दिया । क़िताब के एक-एक शब्द के हिज्जे और इमला ख़ूब देख लिया था।

इमला का इम्तिहान होने लगा। मास्टर साहब ने आगे-पीछे तमाम बच्चों को बैठा दिया। बच्चे जानते थे कि इमला लिखते वक़्त एक दूसरे की नक़ल नहीं की जाती।

बच्चे इमला लिखने लगे। ख़ुदा का करना, मज़हर शब्द वारिस पर आकर अटक गया। उसे याद न रहा कि वारिस कैसे लिखा जाता है ? सर उठाकर सोचने लगा। आगे असग़र बैठा था। मज़हर की नज़र असग़र की तख़्ती पर पड़ी। उसने ठीक लिखा था। मज़हर को भी याद आ गया। उसने झट लिख लिया। फिर सोचा, यह इम्तिहान क्या हुआ। मैंने तो असग़र का देख कर लिखा है। उसने फ़ौरन वह शब्द काट दिया।

इम्तिहान ख़त्म हुआ। मास्टर साहब तमाम तख़्तियां देखने लगे। बच्चों को ख़ूब नम्बर दिये। जब मज़हर की तख़्ती देखी तो बोले , "मज़हर ! तुम ने वारिस ठीक तो लिखा था, काट क्यों दिया ? अब तो तुम्हारे नम्बर कट जायेंगे!" मज़हर ने सारा क़िस्सा सुनाया। मास्टर साहब बहुत ख़ुश हुए, मज़हर को पूरे नम्बर दे दिये।



# भिड़ का छत्ता

शफ़ीक़ एक नटखट बच्चा है। शरारत उसे ख़ूब सूझती है। नित नई हरकत करता है।

एक दिन की बात है। बच्चों की टोली के साथ कहीं खेलने जा रहा था। राह में एक दीवार मिली। दीवार में एक छेद था। छेद में भिड़ों का छत्ता था। शफ़ीक़ को शरारत सूझी। उसने एक ढेला उठाया और छत्ते पर दे मारा। बच्चे भागे शफ़ीक़ भी उन के साथ भागा। ख़ैर उस दिन सब बच गये। भिड़ों ने कुछ दूर पीछा किया। फिर वापस लौट गईं।

एक दिन उन सब का गुज़र फिर उसी छत्ते के पास से हुआ। सब बच बचाकर जाने लगे। शफ़ीक़ बोला–

"तुम लोग बड़े डरपोक हो, भिड़ों से डरते हो।"

एक ने कहा, "भिड़ों का छत्ता छेड़ना सांप के बिल में हाथ डालना है, यह कहां की बहादुरी है । यह तो नादानी है। बहादुरी खेल के मैदान या अखाड़े में दिखाई जाती है।"

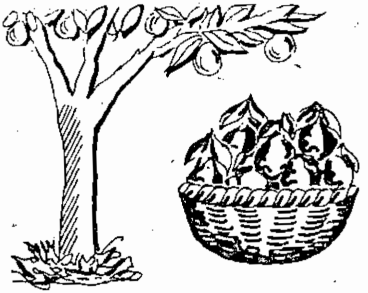
शफ़ीक़ भला कब मानता। वह तो छत्ता छेड़ना बहादुरी समझता

था। लकड़ी का एक टुकड़ा लिया और छत्ते में डाल कर ख़ूब छेड़ा। बच्चे दूर से खड़े तमाशा देख रहे थे। बहुत-सी भिड़ें छत्ते से निकल कर शफ़ीक़ को चिमट गयीं। चेहरे और सिर पर ख़ूब-ख़ूब डंक मारे। शफ़ीक़ रोता चिल्लाता भागा।

कुछ देर बाद उसका चेहरा सूज कर कुप्पा हो गया। बच्चे चिढ़ाने लगे, "शफ़ीक़ भाई ! गाल में कितने लड्डू भर रखे हैं।"

शफ़ीक़ की अब यही चिढ़ हो गई। जब छत्ता मिलता है तो बच्चे कहते हैं–

"शफ़ीक़ भाई ! ज़रा बहादुरी के करतब दिखाओ।" शफ़ीक़ शरमा जाता है। उस दिन से शफ़ीक़ ने फिर कभी छत्ता नहीं छेड़ा।



# छुट्टी

एक स्कूल में बहुत से बच्चे पढ़ते थे। एक बार छुट्टी हुई। पूरे दो दिन की। पांच छः बच्चों ने तय किया :

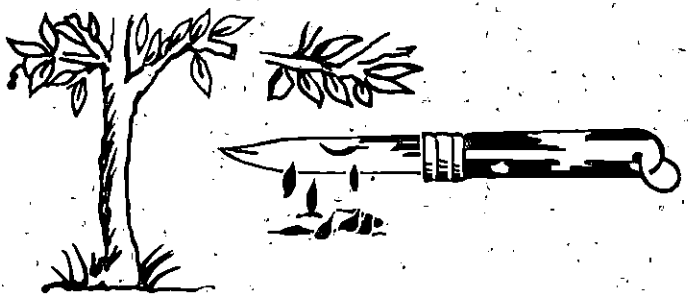
"कल दस बजे अमरूद खाने चलेंगे। शहर के बाहर अमरूद के बाग़ हैं।"

दूसरे दिन दस बजे टोली तैयार हुई बाग़ पहुंच गई। माली को पैसे दिये। बहुत से अमरूद लिये। चाक़ू से काट कर खाने लगे। मज़े-मज़े के अमरूद थे। ख़ूब पेट भर खाये। खा चुके तो सब ने चाक़ू बन्द करके रख दिये और इधर-उधर खेलने लगे।

महमूद लापरवाह था। खुला चाक़ू वहीं छोड़ दिया। खेल-खेल में पेड़ पर चढ़ा। डाली कमज़ोर थी। टूटी तो महमूद नीचे गिरे। चाक़ू पर हाथ पड़ा। हाथ कट गया। बहुत बड़ा ज़ख़्म हो गया, तर-तर ख़ून टपकने लगा।

बच्चे घबराने लगे, किसी ने ज़ख़्म पर हाथ रख कर ख़ून रोकना चाहा। किसी ने अपना रूमाल लपेट दिया। मगर ख़ून न रुका। बराबर निकलता रहा। महमूद बेहोश हो गया।

बच्चे महमूद को उठाकर अस्पताल लाये। डाक्टर ने मरहम-पट्टी की, बोले रग कट गई है। ज़ख़्म ठीक हो जायेगा।



मगर ख़ून बहुत निकल गया है। इसीलिए बेहोश है। बाहर से ख़ून पहुंचाना होगा। नहीं तो जान का ख़तरा है।

"ख़ून कहां से मिलेगा?" बच्चों ने पूछा।

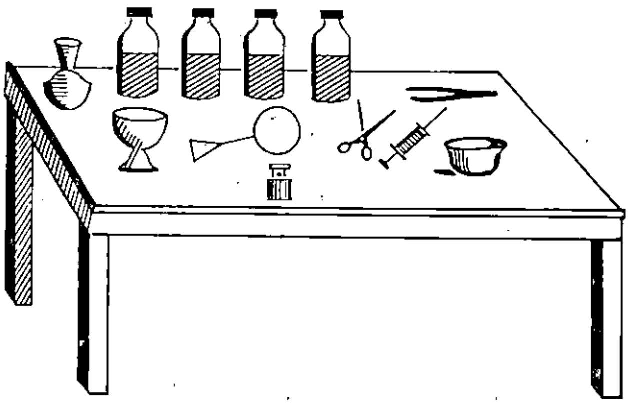
डाक्टर बोले, "अगर तुम सब अपना थोड़ा-थोड़ा ख़ून दे दो तो काम बन जायेगा।"

बच्चों ने एक ज़ुबान होकर कहा–

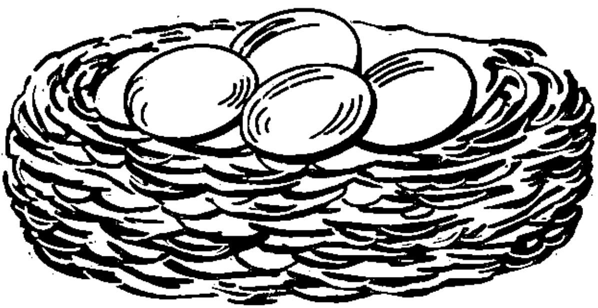
"हम सब तैयार हैं आप हमारा ख़ून निकाल लें। महमूद की जान किसी तरह बच जाये।"

डाक्टर ने आला लगाकर सब का ख़ून निकाला। बच्चों ने ख़ुशी-ख़ुशी अपना ख़ून दे दिया। डाक्टर ने सुई लगा कर

महमूद के जिस्म में ख़ून पहुंचाया। महमूद ने आंखें खोल दीं। बच्चों की ज़ान में जान आयी। ख़ुशी-ख़ुशी सब घर लौटे।



# चिड़िया का बच्चा



बिलक़ीस, बिरजीस दो बहनें थीं। अभी दोनों नन्ही-मुन्नी थीं। एक दिन की बात है, दोनों सेहन में खेल रही थीं। अचानक चिड़िया का एक बच्चा सेहन में आ गिरा। बिरजीस ने दौड़ कर पकड़ लिया।

बोली, "मैं तो इस के पैर में धागा बाधूंगी । फिर धाग पकड़ कर ख़ूब उड़ाऊंगी।"

इतने में बहुत-सी चिड़ियां इकट्ठा हो गईं। चूं-चूं चिल्लाने लगीं। बच्चा बिरजीस के हाथ में चुप्पी साधे कांप रहा था।

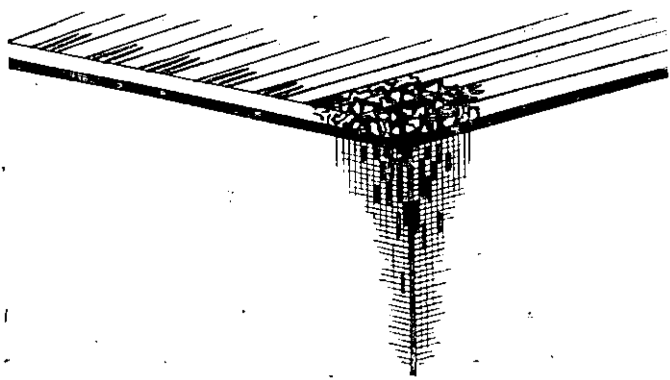
बिलक़ीस ने देखा दौड़ी हुई आई बोली :

"छी-छी ! तुम बेचारी को तंग कर रही हो। देखो उसकी मां चूं-चूं कर रही है। यह वही चिड़िया तो है, जिसने हमा

घर में घोंसला बनाया है। अब तक बच्चे नन्हें-मुन्ने थे, उड़ना जानते न थे। अब उस की अम्मी उड़ना सिखा रही है, तो तुम पैर में धागा बांधोगी। इसकी भी तो हमारी तरह जान है। तुम्हारे पैर में अगर रस्सी बांध कर खींचा जाये तो कितना दुख होगा और अम्मी तुम्हारे लिए कितनी बेचैन होंगी। मेरी बन्नो इसे छोड़ दो।"

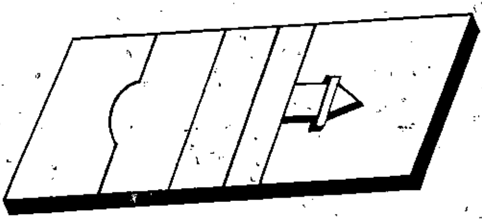
बिरजीस न मानी। बिलक़ीस के समझाने पर भी वह अड़ी रही। बिलक़ीस ने सहन की दीवार से लगाकर एक चारपाई खड़ी की। बिरजीस के हाथ से बच्चा छीन लिया। चारपाई की मदद से ऊपर चढ़ गई और बच्चे को दीवार की मुंडेर पर रख आयी।

चिड़ियों ने चूं-चूं करना बन्द कर दिया। अपने मुन्ने को फुर्र से उड़ा ले गई। बिरजीस अपना-सा मुंह लेकर रह गई।



# मनी बैग

नन्हे-मुन्ने दो भाई थे। दोनों एक स्कूल में पढ़ते थे। एक दिन की बात है। स्कूल की छुट्टी हुई, दोनों ने अपने बस्ते लिये। घर की तरफ़ चले। हंसते-खेलते जा रहे थे। अचानक नन्हे की नज़र एक मनीबैग पर पड़ी। मनीबैग बीच राह में पड़ा था। नन्हे ने दौड़ कर उठा लिया, बोला–



"भाईजान ! न जाने किसका है, इसमें तो रुपये रखे जाते हैं। मुन्ने ने मनीबैग ले लिया। खोल कर देखा, उसमें कई ख़ाने थे। किसी में नोट रखे थे, किसी में रुपये पैसे। एक ख़ाने में एक तस्वीर थी। तस्वीर के पीछे लिखा था–

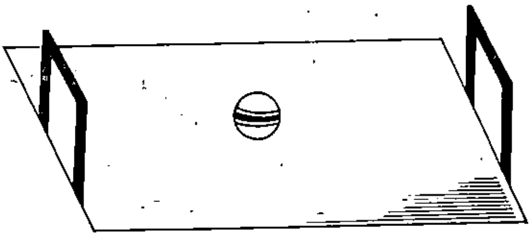
| |
|---|
| मनमोहन, बी.ए.,बी.टी. |
| हैड मास्टर, डी.ए.वी. स्कूल |

पता देखा, दोनों समझ गये, हो न हो यह बैग उन्हीं का है। मुन्ने ने कहा–

"मैं ने डी.ए.वी. स्कूल देखा है। यह हमारे रास्ते में पड़ता है। चलें उनका पता लगाकर दे आयें। वे बेचारे बहुत परेशान होंगे।"

दोनों डी.ए.वी. स्कूल पहुंचे। चपरासी से पता पूछा। पहले तो उसने बताने से इनकार किया। मगर जब आने की वजह बताई तो चपरासी उन्हें हैड मास्टर साहब के पास ले गया। मनीबैग हैड मास्टर ही का था। बच्चों की ईमानदारी से वे बहुत खुश हुए। दोनों की बड़ी तारीफ़ की। मिठाई के लिए पैसे देने लगे, मगर दोनों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया।





# मैच

बच्चों की दो टोलियों में मैच था। बड़े ज़ोरों की गेंद खेली जा रही थी। सारे बच्चे कोशिश कर रहे थे कि अपनी तरफ़ गोल होने से बचाएं और दूसरी टोली की तरफ़ गोल कर दें गेंद के लिए तय था कि पैर से बढ़ाई जाएगी। गोल पर खड़े होने वाले के सिवा और किसी को हाथ से गेंद छूने की इजाज़त न थी। अगर ग़लती से किसी और का हाथ गेंद से छू जात तो फ़ौरन दाव ले लिया जाता। बड़ी देर तक खेल होता रहा बराबर का जोड़ था। न ये हारे न वे।

खिलाड़ियों में एक बच्चे का नाम सईद था। सईद बड़ी बहादुर से खेल रहा था। मैच की वजह से हर बच्चे में जोश था मगर सईद में सबसे ज़्यादा था। वह पूरी कोशिश कर रहा थ कि अपनी तरफ़ गोल न होने दे और दूसरी टोली हार जाये।

अल्लाह का करना एक बार गेंद बड़ी तेज़ी से सईद क टोली की तरफ़ बढ़ी। सईद दौड़कर रोक रहा था। गेंद गोल

के क़रीब पहुंच गई थी। सईद ने हर तरह गोल बचाने की कोशिश की। बहादुरी के ख़ूब-ख़ूब करतब दिखाए। मगर अनजाने में गेंद उसके हाथ से छू गई। सब बच्चे खेल में लगे थे। कुछ गोल करने की फ़िक्र में, कुछ गोल बचाने की फ़िक्र में। गेंद को हाथ लगते किसी ने नहीं देखा। गोल के पास दांव लगने का मतलब यह था कि गोल यक़ीनी है। सईद को ख़्याल आया कि अगर बताता हूं तो गोल हुआ जाता है और हमारी टोली हार जाती है। न बताऊं तो बेईमानी होगी।

आख़िर वह हार जीत की परवाह किये बग़ैर चिल्ला उठा, "गेंद मेरे हाथ से छू गई, आप लोग दांव ले लें।"

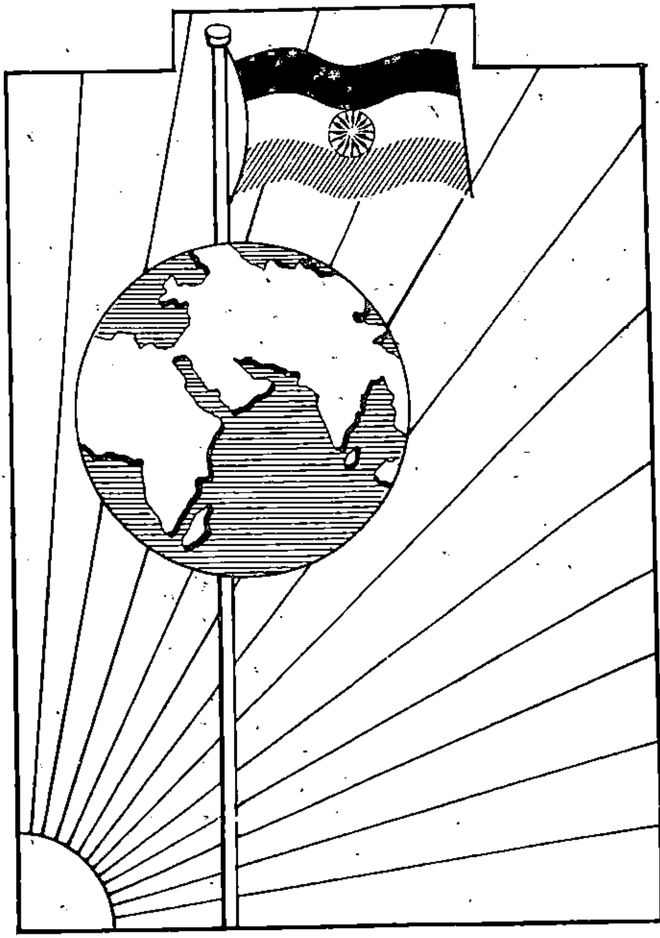
दूसरी टोली के बच्चों ने गोल के पास दांव लिया। एक अच्छे खिलाड़ी ने ऐसी चोट लगायी कि गेंद सीधी गोल में पहुंची। तमाम कोशिशों के बाद भी सईद की टोली हार गई।

खेल ख़त्म हुआ। सईद की टोली के बच्चों ने सईद को बुरा-भला कहना शुरू किया। बोले, "तुम ने बताया न होता तो आज हम न हारते। बताने की ज़रूरत क्या थी। कौन देखने गया था। उस दिन कबड्डी के मैच में भी तुम ने झट कह दिया था कि मेरे जिस्म से इसका हाथ छू गया। हालांकि हम लोगों ने क़ायल कर दिया था कि नहीं छू गया है।

सईद बोला, "तुम लोग भी अजीब लड़के हो। तुम्हारा मतलब यह है कि जीतने के लिए मैं बेईमानी करता या झूठ बोलता। छी-छी, हार-जीत के लिए इतना बड़ा पाप मैं क्यों करने लगा। बहादुरी से खेलना और बात है। मैंने खेलने में तो कोई ग़लती

नहीं की। बेईमानी करके जीतना बहादुरी नहीं बुज़दिली है।

सईद की बात सुनकर तमाम बच्चे शर्मिन्दा हो गये। सईद से नाराज़ होने के बजाय अब सब सईद की तारीफ़ करने लगे।

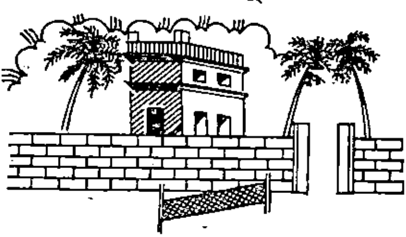


# समझदार कुत्ता

हमारे पड़ोस में एक दारोग़ा जी रहते हैं। उनके घर एक कुत्ता पला है। दारोग़ा जी कुत्ते को बहुत प्यार करते हैं। कहीं जाने लगते हैं तो कुत्ता भी पीछे हो लेता है।

कुत्ता रात भर पहरा देता है। घर के चारों तरफ़ दौड़ता फिरता है। हर दम भौं-भौं करता है। हर आने वाले पर भौंकता है।

दिन में ज़्यादातर सोता है। अक्सर बीच रास्ते में पड़ा रहता है। मस्जिद जाओ तो मिलता है, स्कूल जाओ तो मिलता है।



एक दिन की बात है, मैं स्कूल से लौट रहा था। कुत्ते को देखा, बीच रास्ते में पड़ा था। मैंने कहा, "क्यों जी! मैं जब इधर से गुज़रता हूं, तुम्हें यहीं पड़ा देखता हूं। सुबह स्कूल जा रहा था तब तुम यहीं पड़े थे। इस वक़्त लौटा तो तुम यहीं मिले। आख़िर तुम दिन भर यहां क्यों पड़े रहते हो ?"

कुत्ते ने दुम हिलाई, मेरा पैर चाटने के लिए आगे बढ़ा। मैं ज़रा पीछे हट गया और कहा, देखो दूर से बात करो। तुम नापाक जानवर हो। मेरे कपड़े नापाक हो जायेंगे। तुम्हारा लुआब

नापाक है। नापाक कपड़ों में मेरी नमाज़ कैसे होगी ?''

कुत्ता वहीं रुक गया। बोला, ''मियां सुनो, मैं यहां बेकार नहीं पड़ा रहता। पड़े-पड़े बड़ा काम करता हूं।

मैं परखता रहता हूं कि मुहल्ले में कौन-कौन बच्चे भले हैं और कौन बुरे।''

''वह कैसे ?'' मैं ने झट पूछा।

कुत्ते ने कहा, ''जो बच्चे अच्छे होते हैं वे तो अपने रास्ते चले जाते हैं, मुझे बिल्कुल नहीं छेड़ते। मगर बुरे बच्चे बिना किसी वजह छेड़ते हैं। कभी मेरी दुम पर पैर रख देते हैं। कभी दूर ही से ढेले फेंकते हैं। अपने मुहल्ले के बच्चे हैं, इसलिए मैं माफ़ कर देता हूं। अगर ऐसे ही छेड़ते रहे तो एक दिन काट खाऊंगा। फिर छठी का दूध याद आ जायेगा।''

''अच्छा यह तो बताओ, तुमने मुझे कैसा पाया ?'' मैंने पूछा।

''तुम तो बहुत भले इनसान हो।'' कुत्ते ने जवाब दिया।

तुम रोज़ इधर से गुज़रते हो। कभी स्कूल, कभी मस्जिद, कभी बाज़ार । मगर मुझको कभी नहीं छेड़ते। अपने काम से काम रखते हो। रास्ता काट कर निकल जाते हो।''

मैं अपने बारे में उसकी यह राय सुनकर बहुत ख़ुश हुआ।

# चिड़ीमार

एक चिड़ीमार ने एक चिड़िया पकड़ी। चिड़िया थी तो नन्ही-मुन्नी, मगर थी बहुत चालाक। चिड़ीमार से कहने लगी :

"मियां चिड़ीमार! मुझे मारकर तुम क्या पाओगे ? नन्हीं-सी ज़ान ! बस एक बोटी गोश्त। इससे तुम्हारा पेट कब भरेगा। तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तीन बातें ऐसे गुर की बताऊं — कि मान लो तो बहुत बड़े आदमी बन जाओ।"

चिड़ीमार तैयार हो गया। चिड़िया ने कहा, "पहली बात तो तुम्हारे हाथ पर बैठ कर बताऊंगी। दूसरी दीवार पर पहुंच कर और तीसरी बात उस वक़्त बताऊंगी जब उड़कर पेड़ पर जा बैठूं।

चिड़ीमार ने उसे छोड़ दिया, चिड़िया उड़कर उसके हाथ पर आ बैठी और बोली, "अनहुई बात का कभी यक़ीन न करना।"

यह कहकर चिड़िया फुर्र से उड़ी और दीवार पर जा बैठी। बोली–

"दूसरी बात यह कि जो चीज़ हाथ से जाती रहे, उसका ग़म न करना।"

यह कह कर चिड़िया दीवार से उड़ी और पेड़ पर जा बैठी। थोड़ी देर चूं-चूं किया फिर ज़रा फुरेरी ली और कहने लगी –

"मियां चिड़ीमार ! तीसरी बात बताने से पहले मैं तुम्हें एक

अजीब बात सुनाती हूं।"

"मेरे पेट में एक बड़ा-सा हीरा है, तुम पाते तो मालामाल हो जाते।"

यह सुनकर चिड़ीमार बहुत पछताया। हाय-हाय करने लगा। चिड़िया ने उसको रोते देखा तो बोली, "क्यों जी ! अभी मैंने तुम्हें समझाया है कि अनहुई बात का यक़ीन न करना। मेरी छोटी-सी चोंच है। मैं बड़ा-सा हीरा कैसे निगल सकती हूं। दूसरे मैं तुम्हारे हाथ तो आने से रही, फिर तुम्हारा पछताना और रोना कैसा ? मैंने तुम्हें बताया था कि जो चीज़ हाथ से जाती रहे, उसका ग़म न करना।"

चिड़िमार को अपनी भूल पर शर्म आई। बोला, "मुझसे ग़लती हुई। अच्छा अब तीसरी बात बताओ।"

चिड़िया बोली, "तुम ने मेरी पहली दो बातों पर कब अमल किया जो तीसरी भी बता दूं। ऐसे नादान को अच्छी बात बताने से क्या फ़ायदा जो उस पर अमल न करे।" यह कहकर चिड़िया फुर्र से उड़ी और आंखों से ओझल हो गई।